International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(1): 44-52

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(1): 44-52
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-11-2017
Accepted: 17-12-2017

चंद्रेश चौहान
शोध कर्ता संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाडिया
उदयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
चंद्रेश चौहान
शोध कर्ता संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाडिया
उदयपुर, राजस्थान, भारत

रामायण के आश्रित ग्रंथो मे राम का वर्णन

चंद्रेश चौहान

प्रस्तावना

दशरथनंदन श्री राम को भारत के जन जन के ह्रदय में प्रतिष्ठित कराने उन्हें मर्यादापुरुषोत्तम के रूप में प्रथित कराने तथा राम कथा को भारत मे ही नही अपितु विश्व में प्रचलित कराने का श्रेय आदिकवि वाल्मीकि रामायण को प्राप्त है । लौकिक संस्कृत का प्रथम काव्य रचने का गौरव वाल्मीकि को ही प्राप्त है वाल्मीकि ने रामायण में जिस रामकथा का प्रवर्तन किया उसके आधार पर बाद रामकथा सम्बन्धी अनेक कृतियों की रचना हुई, रामायण से प्रणीत अनेक काव्य, नाटक, महाकाव्य में वाल्मीकि रामायण के राम के का दर्शन हुआ तदाश्रीत ग्रंथो ने रामकथा का आश्रय लेकर अनेक रचनाए की है। रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राम की सम्पूर्ण जीवन गाथा है इसमें सीताचरित, राज्याभिषेक, परशुराम् संवाद, बाली संवाद,आदि अनेक चरित्र अपनी पूर्ण दीप्ति के साथ प्रकाशित होते है रामायण और तदाश्रीत काव्यों में राम ही नही अपितु राम से जुड़ा प्रत्येक पात्र ही सूर्य के तेज और प्रकृति को धारण किये हुए है प्रत्येक पात्र सूर्य की तरह अपने ह्रदय को जलाकर निरन्तर तप कर रहा है । जिससे सृष्टि मधुमय हो सके।

प्रतिमानाटक मे वर्णित राम

राम के चरित्र में प्रारम्भ से ही विराग पूर्ण भावना का दर्शन होता है। कैकेयी के द्वारा उन्हें वनवास मिला है पर उसके प्रति किञ्चिन्तमात्र भी क्रोध नहीं है। राज्याभिषेक छोड़ उन्हें वन जाना पड़ रहा हैए पर वे इससे जरा भी विचलितनहीं होते है। लोग इस धैर्य पर आश्चर्य प्रकट करते हैं। पर वे इसे सामान्य बात समझकर टाल जाते है। उनका कहना है यदि पुत्र ने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया जो इसमें आश्चर्य क्याः इतना ही नहीं वे रामायण के राम से भी अधिक प्रभविष्णु सहिष्णु एवं कोमल है। अपने वनवास के सम्बन्ध में उनकी यह धारणा उन्हें कितनी ऊपर उठा देती है।

> वनगमन निवृत्तिः पायिवस्यैव तावत्, मम पितृपश्चत्ता बालभावः स एव।
> नवनृपतिविमर्शे नास्ति शंका प्रजानामय च न परिभोगेर्वाच्ति भ्रातरो मे।।[1]

राम के व्यक्तित्व अनासक्तिमय प्रत्यक्ष कर्मवाद की मंजुल झाकी प्रस्तुत की है। निष्काम भाव से जीवन के कठोर कर्मक्षेत्र में अवर्तीण होते है। अन्त में वे अपने अतुलनीय पराक्रम से प्राप्त लंका के साम्राज्य को रावण के भाई विभीषण को

आसानी से समर्पित कर देते है। राम प्रतिमा नाटक के राम धीरोदात्त नायक है वे अनासक्त होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करने वाले है अपने जीवन के कठोर कर्मक्षेत्र में वे निष्काम भाव से अवतारित होते है। यहाँ तक कि वे अपने अतुलनीय पराक्रम से प्राप्त लंका के साम्राज्य को भी विभीषण को दे देते है। राम प्रारम्भ से ही निर्लोभिता की भावना दृष्टिगत होती है। कैकेयी से उन्हें वनवास मिला पर फिर भी उनके हृदय में उसके प्रति आक्रोश की भावना नही है।

मम प्रवजनादद्य कृतकृत्या नृपात्मजां सुतं
भरतसत्यग्रमभिपेचयतां ततः।
भपि चीराजिनधरै जटामण्डलधारिणि।
गतेऽरण्यम च कैकेय्या भविष्यति मनः सुखम्।।2

अपना अभिषेक छोड़कर वन जाते समय वे तनिक भी विचलित नही होते। लोग उनके इस धैर्य पर आश्चर्य प्रकट करते है। किन्तु वे इसे समान्य बात समझते है। अपने वनवास के समाचारों से वे दुखी होने के स्थान पर प्रसन्न ही होते है और इस कार्य के लाभ गिनाते हुए कहते है राजा दशरथ का वन जाना रूकाए मुझ पर पिता का वैसा ही वात्सल्य बना रहाएप्रजा को भी नये राजा के अच्छे बुरे झंझट से मुक्ति मिली एवं मेरे अन्य भाई भी ऐश्वर्य भोग से वंचित न रहे।

प्रतिमा के राम का विनित भाव भी दर्शनीय है वे अपनी सोतेलि जननी की आज्ञा को सहन रूप से शिरोधार्य कर लेते है। उन्हें कैकेयी के प्रति थोड़ी सी भी अनास्था नहीं है। यदि कोई कैकेयी के विरूद्ध कुछ भी कहता है तो राम उस का विरोध तथा कैकेयी के पक्ष का समर्थन करते है। सीताहरण के अवसर पर रामायण के राम सीता की विमोदन के लिए मृग मारीच के पीछे जाते है परन्तु प्रतिमा के राम पितृभक्त के रूप में दशरथ के श्राद्ध हेतु कांचनपाश्व मृग कोल लाने के लिए प्रस्थान करते हैं।

हनुमन्नाटक में वर्णित राम

राम और सीता को हनुमन्नाटक में कतिपय स्थलों पर साधारण मानव स्तर पर रखकर मनोरञ्जन प्रस्तुत किया गया है। विवाह के पश्चात् अयोध्या में आकर राम और सीता घुड़साल में जाकर घोड़ों का चाबुक मारने लगे। उनका भ्रान्ति हो गई थी कि अब ये तेज चलने लगेंगे तो सूर्य के घोड़ों के तेज चलने के कारण शीघ्र रात आयेगी और फिर उनकी प्रणयक्रीडा का सुखद समय होगा इसी प्रकार है सीता के द्वारा बिल्ली की पूजा करना जो उस मुर्गे को खो जाने वाली है जिससे बाग देने से प्रातःकाल हो जाता है और सीता को राम से अलग होना पड़ता है। निश्चय ही ऐसे प्रकरण परवर्ती मनोरञ्जनविदो के द्वारा पिरोये गये है। हनुमन्नाटक में उस गुप्तकालीन परम्परा को अक्षुण्ण रखा गया है जिसमें नायिका के पाद.प्रहार को नायक आनन्द का परम प्रकर्ष मानता है यथा राम अशोक से कहते है ृ

कान्तापादलाहाविस्तव मुदे तद्वन्ममाप्यावयोः[3]

इस नाटक में राम को सरल बताया गया है वे वाल्मीकि रामायण की भांति बाते बनाकर बालिवध को उचित नहीं सिद्ध करते है अपितु अपने को निरपराध बालि की हत्या के कारण मन्दभाग्य कहते हैं। उन्होंने बालि से कहा

शुद्धिभविष्यति पुरन्दरनन्दन त्वं
भामेव चेदहह पातकिनं शयानम्।
सौख्यार्थिनं निरपराधिनमाहनिष्य
स्यस्मात् पुनर्जनकजाविरहोऽस्तु मा ये।। [4]

नाटक के प्रारम्भ में राम लक्ष्मण से कहते है कि इस रंग भूमि में सम्पूर्ण पृथ्वी लोग आए हुए है। परन्तु वे धनुष को अपने स्थान से हटा भी नहीं सके। ऐसा प्रतीत होता है कि पृथ्वी वी विलीन हो गयी। राम के अपार बल पर लक्ष्मण को पूर्ण आस्था है। अतएव जिस राम उद्यत होते है उस समय लक्ष्मण पृथ्वी से कहते है कि हे पृथ्वी तुम स्वर्ग को सम्हाले रखना शेषनाग कच्छपराज और दिग्गजो तुम भी सावधान रहना क्योंकि श्रीराम धनुष पर प्रयञ्चा चढ़ाने जा रहे है

पृथ्वी स्थिरा भुञ्मंग धारयैना
त्वं कूर्मरात्र तदिदं द्वितयं दक्षोथाः।
दिक्कुंजराः कुरत सात्रितये दिधोर्णां
रामःकरोति हरका मुर्द्रमाततञ्चम।। [5]

यहाँ लक्ष्मण के उस कथन से राम का अद्वितीय पराक्रम ध्वनित होता है। रामचन्द्र धनुष को उठा लेते है। जिससे कि पृथ्वी रूक जाती है जिसे सभी लोगों को आश्चर्य होता है वे सहन में ही धनुष को तोड़ देते है। राम के शौर्य से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रकम्पित हो गया परन्तु राम को इस कार्य पर गर्व नहीं है। वे परशुराम से चिन्तापूर्वक कहते है शिव का यह सुन्दर धनुष राम नामधारी मरे सम्पर्क में आते ही टूट गया। वे पुनः परशुराम से निवेदन करते है कि परशुराम! मैं आपके पराक्रम से अवगत नहीं था भगवान शिव के इस धनुष और आपकी महिमा को भी नहीं जानता था। अतएव मेरी इस अपलता को क्षमा किजिए क्योंकि बालकों के अनुचित कार्य भी गुरूजनों को लाभदायक होते हैं। आपके समक्ष यह मेरा कष्ठ प्रस्तुत है और आपके पास

कुठार हैए आप यथोचित कर लिजिए। राम रघुवंशी ब्राह्मण और गो के प्रति प्रदर्शन नहीं करते।
श्रीराम अपने वाचचातुर्य से परशुराम को प्रसन्न करते हुए कहते है कि हे ब्राह्मण! आपके साथ युद्ध की बात करना भी मेरे लिए अनुचित है क्योंकि आप वीरों के मूर्धन्य है और आपके समक्ष हम सब प्रकार से हीन बल है।
राम निरपराध बालि वध के कारण स्वयं को मन्दभाग्य समझते है। जब समुद्र राम को मार्ग नहीं देता तो वे क्रोधित होकर समुद्र को सुखाने के लिए बाण चलाते है। जब रावण के शक्ति प्रहार में लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाते है तो राम विलाप करते हुए कहते है कि हे तात्! पवनकुमार को धिक्कार है जो तुम्हे रण में अकेला छोड़ आप चले गये। आज मेरा भाई भरत होता तो वह धनुष बाण धरणकर अवश्य तुम्हें शक्ति पात से बचा लेता। इसके उपरान्त लक्ष्मण मूर्छा दूर होने पर वे लक्ष्मण को गले से लगा लेते है और इसके लिए वे हनुमान का उपकार मानते हुए कहते है कि कपिवर! मैं तुम्हारे किए प्रत्यक्ष उपकार के लिए अप्रणे प्राण दे दूँ तो शष जो उपकार तुमने किए है उनका मैं ऋणी रहूँगा। राम को अपने वंश की मर्यादा का भी ध्यान है इसी कारण रावण वध के पश्चात् जब मन्दोदरी उनसे मिलने आती है तो वे मुँह नीचा कर लेते है। राम इतने गुणी है कि परस्त्री शत्रु पत्नी मन्दोदरी भी उनकी प्रशंसा करते हुए कहती है कि राम धन्य है आपकी माता धन्य है आपके पिता आपका कुल भी धन्य है कि आप परस्त्री की तरफ आँख उठाकर नदी देखते है।

धन्या राम! त्वया माता धन्यो राम! त्वया पिता।
धन्यो राम! त्वया वंशः परदारान् न पश्यसि।। [6]

राम भावुक प्रकृति के है इसी कारण जब सीता वन में तीन.चार पग चलकर ही पूछती है कि अब और कितना चलना है तो भावुकता में राम की आँखो में आँसू आ जाते है और वे पृथ्वी की कठोरता त्यागने के लिए कहते है। राम में सहृदयता भी है सीताहरण के पश्चात् वे सीता के वियोग में वन.वन भटकते हुए प्रत्येक नदीएपर्वतएलताओं में सीता का पता पूछते है सीता के वियोग में राम सूर्य चन्द्रमा में भी विवेक नहीं कर पाते इससे हमें उनकी सहृदयता का पता चलता है।

उत्तररामचरित मे राम

उत्तररामचरित में राम को एक लोकप्रिय महाराज के रूप में चित्रित किया गया है उनका चरित्र लोकोत्तर है। उत्तररामचरित में एक आदर्श पति की अपेक्षा आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत किया है। नाटक के प्रथम अंक में ही उनके चरित्र की अनेक विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती है। अंक के आरम्भ धर्मासन में उठकर दुःखी सीता को सान्त्वना देने के लिए सीधे वासगृह में पहुँचते है। वे राजा है इसलिए धर्मासन पर बैठना उनका प्रथम दायित्व है वे पति है अतः दुःखी पत्नि को सान्त्वना देना उनका दूसरा कर्तव्य है राम को दोनों ही कर्तव्यों का पालन करना ही है। वृद्ध लोगों के प्रति उनके मन में अत्यधक आदर है जब कञ्चुकी अभ्यास के कारण उन्हें रामभद्र कहकर सम्बोन्धित करता है और तुरन्त ही सम्भल कर महाराज कहता है तब वे कञ्चुकी से कहते है।

ननु रामभद्र इत्येव मा प्रत्यपचार शोभते तातपरिजनस्य। [7]

आपको जैसा अभ्यास है वैसा ही कहिए जिस समय उन्हें वशिष्ठ का सन्देश प्राप्त होता है। राम अपने कर्तव्य से अनभिज्ञ नहीं थे फिर भी गुरु के आदेश से प्रतिज्ञा करते है कि लोकानुरंजन के लिए वे सर्वस्व अर्पण कर सकते हैं।
उत्तररामचरितम् नाटक में राम का आदर्श उपस्थित किया है। राजा के लिए जनता का हितों प्रजा का अनुरंजन सर्वोत्तम कार्य है। राम न चाहते हुए भी सीता का परित्याग कर दिया प्रजा के कारण बारह वर्ष तक असह्य दुख सहा।
आदर्श पति के रूप में भी उनका जीवन अनुकरणीय रहा है। सोने की मूर्ति बनाकर अश्वमेध यज्ञ किया आत्रेयी. हिरण्यमयी सीताप्रतीकृतिगर्हिणीकृता ।
अतएव राम के प्रति वसन्ति की उक्ति है कि महापुरुषों का हृदय वज्र से भी अधिक कठोर तथा फूल से भी अधिक कोमल होता है।

वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि का हि विज्ञातुमर्हति।।[8]

उत्तररामचरित नाटक में आदर्श राजा के रूप में उनकी कोई त्रुटि दृष्टिगोचर नहीं होती है।
इस नाटक में राम सीता के वियोग के कारण साक्षात् करुणा की मूर्ति हो गये है। उनका दुःख अति गम्भीर घना व पुटपाक के समान है।

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढधनव्यथः।
पुटपाकप्रतिकाशो रामस्य करुणो रसः।।[9]

उत्तररामचरित नाटक में राम के द्वारा लक्ष्मण के मुख से अग्नि परीक्षा की बात सुनकर वे सीता से क्षमा याचना करते हैं। उनकी दृष्टि में सीता गंगाजल तथा अग्नि के समान पवित्र है।

राम प्रजा के पालक के रूप में इस नाटक में प्रदर्शित किया गया है। जिस प्रजा के लिए उन्होंने अपनी प्राणेश्वरी का परित्याग किया उसकी हित चिन्ता में सदैव ध्यान बना रहा।

महावीरचरित में राम

राम का वर्णन इस नाटक में आदर्शवादी की तरह किया गया है। राक्षस सीता की मंगनी करता है लक्ष्मण को यह बात बुरी लगती है परन्तु राम को इसमें कुछ अनौचित्य नहीं प्रतीत होता है वे कहते है

साधारण्याभिरातङ्कः कन्यामन्योऽपि याचते।
किं पुनर्जगतां जेता प्रपौत्रः परमेष्ठिनः।। [10]

कितनी गम्भीरता तथा आदरभरी उक्ति है। ताड़का को मारने का आदेश होता है वह बध्य है इसमें संदेह नहीं रह गया है फिर भी राम का वीर हृदय कह उठता है .

भगवन ! स्त्री खल्वियम्।

परशुराम से बात हो रही है। अस्त्र प्रयोग का प्रारम्भ अब होना ही चाहता है। राम की वीरता का महत्व है कि वे वही रहकर अपनी बहादुरी दिखावें परन्तु वीरता से ओतप्रोत नम्रता का मूल्य वीरता से कम नहीं होता है। राम को गुरूजन का आदेश होता है कि अधश्रूजन की बुलाईट है राम कह उठते है .''एवमादिशन्ति गुरवः'' हमारी इच्छा तो आपके साथ यथायोग्य कार्य करने की ही है। दशरथ,जनक, शतानन्द, वशिष्ठ तथा विश्वामि्र सभी गुरूवर्ग परशुराम को मनाते रहे। परन्तु उनका पारा नहीं उतरा। वह ज्यों के त्यों है। राम की वीरता सौजन्य से इस प्रकार आवृत है कि वे बीच में कुछ नहीं बोलते परन्तु जब उनकी समझ में यह बात आ जाती है कि अब अस्त्र उठ जायेंगे तब वे सुजनता को कायरपन के नाम से कलंकित नहीं होने देते है वे ललकार कर कह उठते है

पौलत्स्य विजयोद्दामकार्त्तवीर्यर्जुनद्विषम्।
जेतारं क्षत्रवीर्यस्य विजयेय नमोऽस्तु वः।। [11]

वीरता का यह स्वरूप है। दमन के अनन्तर जब परशुराम कहते है कि अनतिक्रमणियों रामनिदेशः। तब राम का उदार हृदय कितनी धीरता से कहता है एष वो रामशिरसा प्रणामपर्यायः।

राम केवल आदर्श वीर ही नहीं एक आदर्श पुत्र भी थे। उनकी पितृभक्ति तो आदर्श ही थी मातृभक्ति भी उनके हृदय में काफी निष्ठा थी। दूती अयोध्या से मिथिला आती है संवाद लाती है। राम उससे मिलने को उत्कण्ठित हो उठते है.

राम के हृदय में माताओं के विषय में आदरभरा स्नेह बालू के भीतर पानी की तरह छिपा है उनका अनुमान है कि हमारे प्रवास से मातायें खिन्न होगी। इन स्नेह भावनाओं के पीछे कर्त्तव्य भावना भी राम के हृदय में वर्तमान है। वे राक्षस वध की चिन्ता भूलते नहीं लोग सीता को वीरगृहिणी होने की आशीष देते है राम को अपना कर्त्तव्य स्मरण हो जाता है।

इन सभी प्रकरणों में राम की चारित्रिक विशेषताएँ प्रकट होती है। यही तक का उत्कर्ष इसमें है।

कुन्दमाला मे राम

कुन्दमाला में राम धीरोदात्त नायक है रामायण में राम लक्ष्मण को सीता को गंगा के पार तमसा नदी के तट पर स्थित वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ आने के लिए आदेश देता है वहाँ पहुंचने के लिए नाव द्वारा गंगा को पार करना पड़ता है। नाव द्वारा गंगा पार करने का दृश्य रंगमच पर प्रस्तुत करना अति कठिन है। अतः कुन्दमाला में वाल्मीकि आश्रम गंगा तट पर सीता को वन में छोड़ने का दृश्य किस वज्र हृदय को पिघला देने में समर्थ नहीं है। पशु.पक्षी भी सीता को विपन्न दशा में देखकर शोकाकुल हो उठते है। तृतीय अंक में नैमिशवन में आया हुआ राम सीता पर किए अत्याचारों के कारण दारूण शोक उदीग्न हो उठता है तथा आने आप को कोसता है। सीता की दुर्दशा का ध्यान आते ही वह शोक सागर में डूब जाता है। राम की इस विकलता को देखकर सामाजिकों के हृदय में स्वाभाविक संभवेदना जागृत हो उठती है।

इसी अंक में सीता के हाथ से गुथी हुई कुन्दमाला एवं सीता के पदचिह्न तथा चतुर्थ अंक में बावड़ी में सीता का ही प्रतिबिम्ब देखने से सन्तप्त एवं छटपटाते हुए राम की विकल दशा हमारे कारूणिक भाव को उत्तेजित करने में कोई कमी नहीं छोड़ती। तृतीय तथा चतुर्थ अंक में राम तथा सीता के कथोपकथनों में भी करूण रस की मार्मिक अभिव्यंजना हुई है। यहाँ पर दोनों की अन्त्तवेदना प्रज्वलित हो उठती है तथा राम और सीता के साथ दर्शकों को भी विकल कर देती है। इन संवादों में एक.दूसरे को दिए गए पे्रमपूर्ण उलाहने कारूणिकता की ओर भी अधिक तीव्र बना देते है। उपरोक्त प्रसंगों से स्पष्ट है कि दिङ्नाग के करूणरस पूर्ण राम का वर्णन हृदयस्पर्शी है वह सीधे मर्मस्थलों पर चोट करते है करूण भाव की व्यंञ्जना में राम की भावुकता मुखरित हो उठती है। दिङ्नाग ने कुन्दमाला में जो करूण रस की गंगा प्रवाहित की है उस की विमल एवं सतत् धारा में सीता परित्याग जन्य मालिन्य जदा के लिए धुल गया है।

आश्चर्यचूडामणि नाटक मे राम

आश्चर्यचूडामणि नाटक के नायक राम है जो धीरोदात्त गुणों से युक्त क्षत्रिय वीर एवं पराक्रमी है। इस नाटक में अनेक उदात्त स्वरूप का वर्णन किया गया है। इस नाटक में चार प्रमुख घटनाये है। नाटक की कथा राम चरित के द्वितीय चरण से प्रारम्भ होती है। अतः उससे सम्बन्धित घटनाओं का सन्निवेश किया गया है। राम कीर्ति के विस्तार के मार्ग में बड़े से बड़े स्नेह सम्बन्धों की बलि दे देता है। पिता की आज्ञा शिरोधार्य कर पत्नी सहित लक्ष्मण के साथ राम वनास की अवधि पूरी करे पंचवटी आये हुए है। तट पर लक्ष्मण द्वारा निर्मित पर्णशाला में होता है। राम आनन्द पूर्ति करते है। प्रकृति देवी की गोद में राजमहल के सुख का अनुभव करते है।[1]

राम सीता से कहते है देवी नगर में निवास करने की उपेक्षा वन में निवास करना मुझे लगता हैए देखो खिले हुए फूलों वाले वृक्षों से उत्पन्न सुगन्धि से युक्त वनभूमि ही उद्यान है। स्वच्छ झरनों की हँसी से युक्त मेघ के समान नीले पर्वत ही बनावटी पहाड़ है। सारस पक्षियों के पंखों से दूगनी बढ़ी हुई लहरों वाली नदियाँ ही ग्रीष्म में स्नान के योग्य है। हिमकणों के सम्पर्क से सुगन्धित मलय पवन ही पंखे की हवा है। आजीवन अपने यश समृद्धि कार्य के संवर्धन में लगे राम का हृदय इतना विशाल है कि कैकेयी द्वारा प्रदत्त वनवास को भी उपकारपक्ष में लाने वाले राम के हृदय की महानता की लक्ष्मण मन ही मन प्रशंसा करते है किन्तु कैकेयी के इस निन्दित कार्य के प्रति अपना असंतोष प्रकट करते है। राम लक्ष्मण के आशय को समझ कर माता निंदा करने के लिए लक्ष्मण को फटकारते है। वे कैकेयी के प्रति आदरभाव रखने का लक्ष्मण को उपदेश देते है। जब लक्ष्मण पिता के प्राणत्याग का करण कैकेयी को बताते है तो राम उनके विचार का खण्डन करते हुए राजा के प्राणनाश में श्रवणकुमार के माता पिता के शाप के रहस्य का उद्घाटन करते है।

> नियमसलिलं पित्रोहर्तु निक्षणवन्धययोः
> क्षिपति कलशं तोयाधारे पटुध्वनितं सुते।
> उषसि भृगयां याता राज्ञा वनद्विपशङ्कया
> रभसभिषुरून्मुक्तः कालासनहरत् स्वयम्।।[12]

राम लक्ष्मण के मुख की लाली देखकर वत्स लक्ष्मण मार्ग में मोक्ष पक्ष के अन्वेषण में तत्पर ऋषिजन की अराधना करते हुए स्वेच्छया तीर्थों में विद्यमान गंगा यमुना प्रभति नदियों के जल से अपनी मानसिक चिन्ताओं को दूर करते हुए हम लोग कैकेयराज की पुत्री माता कैकेयी द्वारा इक्ष्वाकुवंशी राजाओं द्वारा अपने राज्याभिषेक के व्याज्य से लाये गये है। लक्ष्मण के द्वारा माता कैकेयी के प्रति उपालम्भ वचनों से खिन्न होकर राम कैकेयी के विषय में लक्ष्मण के सभी आक्ष्यों का खण्डन करके उन्हें मातृभक्त होने का उपदेश देते है।

राम के हृदय में स्त्रीमात्र के प्रति पूर्ण सम्मान की भावना है अतएव शूर्पणखा के प्रणय को नम्रता पूर्वक अस्वीकार करते है भद्रे! तवाडयं व्यवसायः मयापि प्रार्थनीयः। किन्तु काष्ठ से प्रवृद्ध अग्नि का साक्षात्कार करके जनक अथवा शतानन्द के द्वारा प्रदत्त जिसके हाथ को हमने पिता की आज्ञा से ग्रहण किया वह सीता भी ब्रह्मपद को प्राप्त करने के इच्छुक मेरे लिए बन्धन ही है। इसके अतिरिक्त हमने मुनिजन का यह वेश धारण किया है। अतः हे सुन्दर मुखवाली रमणी अब इसके बाद विचारणीय विषय पर तुम स्वयं विचार करो

> साक्षात्कृत्य समित्समिद्धमनलं यस्या गुरोराज्ञया
> हस्तं दत्तमजात्मजेन मुनिना धर्मार्यमालम्बिषि।
> साप्येषा पदमक्षरं जिगमिषोर्बन्धाय मे कल्पते
> सन्नोहोऽयमतः परं सुवदने! चिन्त्यस्त्वया
> चिन्त्यताम्।। [13]

शूर्पणखा अपमान करके भी राम के शरणागत हो उनसे अभयदान पाती है। इस प्रकार संचय मनोभाव राम में ही सम्भव है। किन्तु धृष्टता अपराधी को दण्ड देना व लोक मर्यादा के अनुकूल मानते है। शूर्पणखा जब लक्ष्मण की तरफ दौड़ती है तब राम कहते है ठहरो.ठहरो हे राक्षसी! अपराधी के लिये हम लोग मुनि नहीं है हम लोगों के विषय में मू ुनि की असमर्थता की शंका छोड़ दो। तुम्हारे समान अपराधी को दण्ड देने के लिए हमने इस धनुष को धारण किया है। राक्षसो के प्रति हम लोगों के यह बाण सदा निर्दय ही है।

अतएव शूर्पणखा के कर्ण नासिक छेदन रूप अपमान से भावी राक्षस युद्ध की कल्पना करके भी अविचल भाव से राक्षसों के साथ इस शत्रुता को संसार कल्याण का कारण मान लेते है। तीनों लोकों का शत्रु रावण यदि इसका बड़ा भाई है तब इस धनुष का विश्राम सुलभ नहीं है अर्थात् इसके युद्ध करना अनिवार्य है। राक्षसों से सम्बन्धित यह भाव समस्त राक्षसों के वध द्वारा संसार के लिए कल्याणकारी हो। इनके साहस का चरम निदर्शन सीताहरण के बाद देखने को मिलता है वे सीता के लिए साधारण जन की भांति रोना बिलखना छोड़कर उनके उद्धार का दृढ़ संकल्प करते

है और अपने निश्चय का संदेश शूर्पणखा के द्वारा रावण के पास निर्भीकता पूर्वक भेजते है।

त्रिभुवनरिपुरस्या रावण पुर्ववज्रे
दसुलभ इति ननं विश्रमः कार्मुकस्य
रजनिचर निवद्धं प्रायशो वेरमेतद
भवतुभुवनभत्यै सर्वरक्षौवधेन।। [14]

राम शूर्पणखा से कहते है मेरे नयनों के लिए माया मृग और माया सीता को दिखाकर स्वयं मेरा कपट रूप धारण कर और ;भूत को लक्ष्मण बनाकर शीघ्रगामी तुमने अभी सीता को धोखा नहीं दिया अपितु जीवन व्यतीत करने वाली अपनी स्त्रियो को ही तुमने धोखा दिया है।

प्रसन्नराघवम मे राम

राम प्रसन्नराघव के दिव्यादिव्य धीरोदात्त नायक है। सकलगुणों के आश्रय वे समस्तजनों के चित को आहादित करने वाले है। सरस्वती भी उनके गुणग्राम की प्रशंसा रूप सुधामय वाणी में अवगाहन करने पर ही ब्रह्मलोक से भूलोक तक की लम्बी यात्रा की अपनी थकावट दूर कर पाती है। राम का सर्वप्रथम दर्शन द्वितीय अंक के अन्तर्गत राजा जनक के उपवन में होता है। भावुक हृदय में एक कवि की भांति मधुमास की लक्ष्मी के दर्शन से मुग्ध होकर उसका सरस कवित्वमय एवं मनोहरी को देख कर आस्तिकता के परिपालक वे अत्यन्त श्रद्धा भक्तिपूर्वक चन्द्रशेखरमणी चण्डिका का अभिवन्दन करते है। इतने में ही उन्हे दुर्गापूजन के निमित्त आती हुई किसी स्त्री के मणि नुपुरों की झंकार सुनायी देती है। अपने रघुकुल की मर्यादा का सतत ध्यान रखने वाले वे तुरन्त सजग होकर कहते है. इसलिए हमें इधर नहीं देखना चाहिए। परायी स्त्री क्या ऐसी शंका भी हम रघुवंशियों के संकोच के लिए होती है

तदलमस्माकमितोऽवलोकनेन परस्त्रीति
शड़्काडपि सड़्कोचाय रघूणाम² [15]

परन्तु जब उन्हें यह विदित हो जाता है कि यह स्त्री और कोई नहीं स्वयं राजकुमारी ;राजा जनक की कन्या सीता है तब निर्दोपदर्शना हि कन्यका भवन्ति वचन के अनुसार संकोच छोड़कर सीता जी को लुक छिपकर देखने लगते है। उस समय वे सीता के यौवन सौन्दर्य का कवित्वमय शालीनता एवं सीता जी के चिरकाल तक दर्शन करने से उत्पन्न पूर्वराग से युक्त हृदय हो वे सन्ध्या होते होते सांयकालीन देवपूजन के निमित्त चुने गये पुष्पों के लिए हुए गुरू विश्वामित्र के पास लौट आते है। इसके पश्चात् राम के उदात्त चरित्र का विकास चतुर्थ अंक में दिखाई देता है। गुरू विश्वामित्र की आज्ञा से शिवधनुष को हल्के से ही चढ़ाने का ज्यों ही वे प्रयत्न करते है। ज्यों ही वह धनुष टुट जाता है। धनुष टूटते ही परशुराम जी पहुँच कर राम को धनुर्भञ्जक भली भांति जान लेने पर कुपित होते है। रामचन्द्र जी नम्रता पूर्वक अपने निर्दोष होने की सफाई प्रस्तुत करते है। महाराज मेरा कोई दोष नहीं। मैंने तो शिवधनुष को छुआ अथवा छुआ भी नहीं था कि वह अपने आप टूट गया मैं क्या करूँ किन्तु परशुराम जी को रामचन्द्र का यह अनुनयपूर्ण वचन भी चन्दनदिग्धनाराच सा ही मार्माहत करता है और वे रामचन्द्र के कण्ठ पर प्रहार करने के लिए परशु को ऊँचा कर राम को मुकाबले में आ जाने के लिए ललकारते है। रामचन्द्र के धैर्य ब्राह्मण भक्तिरस धर्म एवं निर्भीकता कड़ी परीक्षा की यह घड़ी प्रस्तुत हो गयी। तथापि वे अपने विनीत स्वभाव से च्युत नहीं हुए। वे स्थिर बुद्धि से परशुरामजी को अनुनय विजय से शान्त करने की चेष्टा करते है हमारे कण्ठ में हार अथवा तीक्ष्ण धार वाला परशु प्रवेश करे हमारी स्त्रियों के नेत्रों में काजल रहे या आँसू हमे इस लोक में चिरस्थायी आनन्द प्राप्त हो या यमराज का मुँह देखे और भाग्य में जो हो वह हो परन्तु ब्राह्मणों के प्रति हम प्रवीर नहीं होंगे।

किन्तु परशुराम जी राम के अनुनय विनय का भी व्यड़्ग्य समझकर बिगड़ते ही जा रहे है। इधर लक्ष्मण के व्यड़्ग्य समझकर बिगड़ते ही जा रहे है। इधर लक्ष्मण व्यड़्ग्य वचन उनके क्रोध की ओर उद्दीप्त करता जा रहा है। एक भाई चिढा रहा है दूसरा विनय कर रहा है परशुराम को यह अच्छा नहीं लगा। व वहाँ समव्रत सकल क्षत्रियों को अपने बाणों का विषय बनाने के लिए तैयार हुए। राम ने पुनः नम्रतापूर्वक समझाया। क्षत्रियों को बालात् इसमें क्यों घसीटा जा रहा है। धनुष तोड़ने का अपराध मुझसे हुआ है तो मैं आप के बाणों को अपने वक्षस्थल पर झेलूँगा। राम की यह धृषता समझ कर व और अधिक उत्तेजित हाँ कहने लगे तू क्या है। तेरा गुरू विश्वामित्र भी मेरे बाणों को झेलने में असमर्थ है मारीचों के भय से ही उसने ब्रह्मा से ब्राह्मण शरीर की सादर याचना की थी।

अनर्घराघव में वर्णित राम

राम का चित्रण इस नाटक में आदर्श वीर के रूप में किया गया है। विश्वामित्र के यज्ञ में उनके गुरू विश्वामित्र उन्हें आदेश देते है कि गृहाणं चापं निगृहाण ताड़काम् उस पर वे कहते है कि यह तो स्त्री है। आप

इसको मारने की आज्ञा क्यों दे रहे है। इस पर विश्वामित्र कह उठते है कि आश्रम की बाधा समीप आ रही है। उत्तर प्रत्युत्तर मत करो। इसको मारो इस पर राम उसका वध तो करते है परन्तु उन्हें लज्जा होती है। परशुराम से बातें हो रही है दशरथ जनक शतानन्द सभी गुरूजन उन्हें मना रहे है परन्तु उनका पारा नहीं उतरता राम की वीरता सौजन्य से आवृत है। वह कुछ कठोर बात नहीं निकालते है। परशुराम बढ़ते जा रहे है तब राम ने देखा कि ऐसे काम नहीं चलेगा तब वे बोल उठे .

नृपानप्रत्यक्षान् किमपवद से नन्वयमहं
शिशुक्रीडाभग्न त्रिपुरहरधन्वा तव पुरः।
अहङ्कारक्रूरार्जुनभुजवनश्चनकलानिसृष्टार्थो बाहुः
कथय कतरस्ते प्रहरतु।। [16]

व्यर्थ में बूढ़ों का अपमान क्यों करते है। बालक्रीडा में ही शिवधनुभुञ्जक मैं तो आपके सामने ही खड़ा हूँ सहस्त्रार्जुन को मारने वाला आपका कौनसा हाथ मुझ पर प्रहार करेगा कृपया इसकी आज्ञा दीजिए। कितना नम्र और दृढ़ यह वचन है। कितनी बहादुरी इस वचन के पीछे छिपी है। परशुराम परास्त होकर जाने लगते है तब भी राम ने उनकी बड़ी प्रतिष्ठा की जिससे उनकी वीरता में चार चांद लग जाये।

बालरामायण में वर्णित राम

बाल रामायण में प्रथम अंक में ही स्पष्ट हो जाता है कि राम राक्षसों से रक्षा की औषध है .

राक्षसरक्षौषध रामभद्रमानेतु।।

तृतीय अंक में जब राम सीता स्वयंवर में आते है तो तब शतानन्द राम को देखकर कहता है हे सीरध्वज जनक आज ताड़का के कुल को ताडित करने वाले रामभद्र के दर्शन से दशरथ का बचपन याद आ गया है।

तभी राम का आगमन होता है कि वह सीता को देखकर मन ही मन में सोचते है कि अरे! यही वह सीता है जिनकी स्वयं भगवती पृथ्वी माता हैए यज्ञभूमि जन्म मन्दिर है और शिव के धनुष का आरोपण जमाता का गुण है। परशुराम के अत्यन्त कुद्ध होने पर भी राम में विनम्रता उच्चकोटि की प्रस्फुटित होती है वे अपना सिर अपना परशुराम के सामने कर देते है।

स्वायतेन कुठारेण स्वाधीने राममूर्धनि।
यथेष्टं चेष्टतामार्यस्त्वदाज्ञां को निषेधति।। [17]

किन्तु विनम्रता के साथ ही साथ उनमें दृढ़ता भी उसी कोटि की है। जब परशुराम युद्ध का हठ करते है तो वे उसके लिये भी प्रस्तुत हो जाते है। राम की यही विनम्रता समुद्र के प्रति भी दिखाई पड़ती है। जब समुद्र राम के अनुनय पर ध्यान नहीं देता तो राम पौरूष का आश्रय लेकर समुद्र को अग्नि बाणों द्वारा दग्ध करने पर उद्यत होते है। पर जब समुद्र गंगा यमुना के साथ राम के पास विनीत भाव से उपस्थित होते है। उस समय श्री राम उन्हें प्रणाम कर विनम्रता से आदेश देने को कहते है.

भगवान रत्नाकर नमस्ते। नन्वहं प्रशास्यो भगवतः।[18]

यही विनम्रता और नीति उन्होंने अपने शत्रु रावण के प्रति भी अपनायी। राम.रावण के द्वैरथ युद्ध आरम्भ होने से पूर्व भी उन्होंने रावण से एक बार सीता को लौटाने के लिए कहा .

भो लङ्केश्वर दीयतां जनकजा रामः स्वयं याचते।
कोऽयं ते मतिविभ्रमः स्मर नयं नाद्यापि किञ्चिद् गतम्। [19]

किन्तु राम में विनम्रता के साथ ही साथ पराक्रम भी चरम कोटि का है। चाहे विपक्षी कितना भी प्रबल और यशस्वी हो राम पर युद्ध थोपता है। तो राम उसका दमन करते है। उनकी नम्रता उनके शौर्य का आभूषण है। उनका शौर्य शिव के शौर्य के तुल्य है।

रघुवंशम मे राम

राम का स्वरूप अत्यन्त मनोरम था। तभी उनका नाम राम रखा गया। जब राजा राम विश्वामित्र के साथ कामदेव की तपः स्थली पहुँचे तब वे कामदेव के सौन्दर्य को भी तिरोहित कर रहे थे। राम के सौन्दर्य पर राजा जनक भी मुग्ध हो गये थे तभी उनके मन में यह शंका हुई कि मैंने सीता स्वयंवर में धनुष को तोड़ने जैसी कठोर शर्त क्यों रखी।

तस्य वीक्ष्य ललितं वपुः शिशोः पार्थिवः प्रयितवंश जन्मनः।
स्वयं विचिन्त्य च धनुर्दुरानम पीड़िता दुहिजतृशुल्क संस्थय।। [20]

राम स्वभाव से अत्यन्त दयालु थे दीन दुखियों के प्रति उनके हृदय में सदैव सहानुभूति रहती थी। अपनी एक भूल के कारण गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या समाज से

बहिष्कृत कर दी गई। राम से उस पर कृपा कर उद्धार किया। जटायु के घायल होने पर राम बड़े विचलित हो गए और जटायु के मरण पर उसकी सारी क्रियाएँ अपने पिता के समान की। बालि के विरूद्ध सुग्रीव की सहायता करके राम ने रावण से युद्ध करने के लिए एक शक्तिशाली मित्र प्राप्त किया और विभीषण को आश्रय देकर शत्रु के घर का भेद जानने की नीति को अपनाया। बालि की पत्नी तारा को रखने पर राम ने सुग्रीव की निन्दा नहीं की। बाली का राज्य सुग्रीव को तथा रावण का राज्य विभीषण को देकर उन्होंने अपने उदार व्यक्तित्व को पुष्ट किया। विश्वामित्र ऋषि ने राम को धनुर्वेद के वे गूढ रहस्य तथा विशेष शास्त्रास्त्र प्रदान किये जो अन्य किसी के पास नहीं थे। राम में शारीरिक बल भी प्रचुर था उन्होंने अल्पायु में ही ताडकासुर तथा सुबाहु का संहार किया। दण्डकारण्य में भी अनेक राक्षसों को अकेले ही परास्त कर दिया। क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए राम को परशुराम की चुनौति को स्वीकार करना पड़ा था किन्तु परशुराम द्वारा उत्तेजित होकर राम को कहे गये कटु वाक्यों के उत्तर में राम ने अशिष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं किया।

राम सीता से अत्यधिक प्रेम करते थे। सीता का परित्याग जब लोक लाज से किया जब लक्ष्मण से उसका अन्तिम सन्देश सुनकर अश्रु बहने लगे। राम सीता से इतना प्रेम करते थे कि उन्होंने सीता परित्याग के बाद भी दूसरा विवाह नहीं किया। यहाँ तक कि अश्वमेघ यज्ञ का अयोजन करने में जब जोड़े से यज्ञ का आयोजन करने की स्थिति आई तब भी श्रीराम ने सोने की मूर्ति बनवाई.

> सीतं हित्वा दशमुखरिपुर्नोपयेमे यदन्यां
> तस्या एवं प्रतिकृत सखो यत्क्रतूनाजहार।। [21]

जानकीहरण महाकाव्य मे राम

जानकीहरण महाकाव्य के नायक राम सूर्यवंश के प्रतापी सम्राट दशरथ के पुत्र है। उनमें धीरोदात नायक के सभी गुणों का सुन्दर एवं समुचित समावेश उपलब्ध होता है।

राम देव कोटि के पात्र है। जैसा कि महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में रावण में त्रस्त देवताओं को जगत्पति विष्णु द्वारा राम रूप पृथ्वी पर अवतरित होने का आश्वासन दिये जाने से स्पष्ट होता है . यद्यपि में अपने उदर में तीनों लोकों को सम्पूर्ण भार वहन कर रहा हूँ फिर भी मैं मृत्युलोक मे एक स्त्री के गर्भ से जन्म लेकर और राम के बाम से विख्यात होकर उस देवताओं के शत्रु राक्षसों के स्वामी रावण के सिरों को एक ही बाण से काट कर उसे पराजित कर दूँ।

राम की हाथों की क्रान्ति ने तो प्रफुल्ल कमलों की प्रभा की घुटने टेकने के लिए विवश कर दिया था। दृष्टि चक्षु और ज्ञान चक्षु नामक उनकी दो आँखे थी। दृष्टि चक्षु तो केवल कान तक पहुँचती थी। किन्तु ज्ञान चक्षु समस्त वेदों के पार तक जाती थी।

इसी का मार्मिक वर्णन करते हुए कवि ने लिखा हैं .

> ज्ञानं विलोचनमिति प्रयिते तदीये नेत्रे उभे विमलवृत्ति गुणस्वभावे।
> एकं तयोः श्रुतिपथस्य समीपमात्रं यातं प्रपन्नमयिलश्रुति पारमन्यत।। [22]

राम में पितृ एवं मातृ भक्ति कूट.कूट कर भरी थी। उन दिनों परिवार पितृ प्रधान थे पिता ही परिवार का सर्वमान्य था उसकी आज्ञा सर्वमान्य थी। माता.पिता राम के लिए परमस्नेह एवं श्रद्धा के भाजन थे। बाल्यावस्था में राम का मुनि विश्वामित्र के यज्ञ रक्षार्थ प्रस्थान के पूर्व पिता के चरणों में प्रणयन इसका स्पष्ट प्रमाण हैं। वस्तुतः पुत् नामक नरक से जो त्राण दिलावे वहीं पुत्र है। अतएव पुत्र के अभाव में माता.पिता का अद्धिग्न रहना स्वाभाविक था।

> रामायण कालिक विनात्मजेनात्मवतां कुतो रतिः[23] का कुमारदास का दृष्टिकोण "विधुरश्चेवसि पुत्रकाम्यया [24]अथवा अदृष्टपुत्रानन बन्ध्य दृष्टि[25]

आदि प्रयुक्तियों से बड़ा साम्य है निराश होने के कारण अपने अभ्युदय के प्रति कोई अच्छा न होने से जो स्वयं अपने को कोस रही थी ऐसी कैकेयी को भला बुरा कहते हुए भरत को रोककर राम ने कहा था .

अपने पति के सत्य का पालन करने वाली कैकयी तुम्हारी श्रद्धा का पात्र हैं। जो पूजनीय हैं उसकी पूजा से मुँह फेरने में अमंड्गल होगा।

> पूजनीया च ते देवी पत्युः सत्यानुपालिनी।
> दूषभिष्यति पूज्येषु पूजावैमुख्यमायतिम्।।[26]

राम में स्वाभिमान कूट.कूट भरा। वे कहते हैं। गुण की स्पृहा से गुणवान पुरूषों से किये हुए उपकार का जो असज्जन पुरूष तुच्छ समझता है। वह व्यर्थ किये हुए परिश्रम जनित कोप से निस्सन्देह मारा जाता हैं। इतना ही नहीं वे और भी कहते है संसार को मारने की आतुरता जिसका क्रम है ऐसे यमराज को केवल बलि को मारकर तृप्ति नहीं होगी। अर्थात् वह आपको भी मारेगा।

पदं नवैश्य्यबलेन लम्भितं विसृज्य पूर्व समयो विमृश्यताम्।
जगज्जिघत्सातुकष्ठपद्धतिर्नवालिनैवाहित तृप्तिरन्तक।।[27]

राम अत्यन्त पराक्रमी थे। वीरता उनमें कूट.कूट कर भरी थी फिर भी वे अंड्गद को रावण के पास शान्ति का प्रस्ताव लेकर भेजते है कि सीता को लौटा दे लेकिन रावण उसकी बात पर ध्यान नहीं देता तथा गर्व के नशे में ही चूर रहता है। अंगद कहते है कि तुम्हारा यह यश व्यर्थ है इन्द्रलोक को जीतने वाले अपने इस अजेय यश को राम के तेज से उत्पन्न अग्नि की दीप्ति से दिशाओं में फूले हुए कांसे के वन के समान जला हुआ समझो लेकिन वह एक नहीं मानता और सीता को नहीं लौटाता जिसकी परिणति युद्ध में बदल जाती है राम ने शत्रु को जीतने के लिए न केवल समुद्र पर सेतु बाँधा बल्कि अपने बाणों की धनी परम्परा से सूर्य के रास्ते में भी पुल बाँध लिया था। राम इतनी फूर्ती से बाण चलाते थे कि बाण दिखलायी नहीं पड़ता था। अतः उनका धनुष से पहले निकलना और शत्रु के शरीर पर लगना केवल अनुमान से ही जाना जा सकता था। इसी का वर्णन करते हुए कुमारदास ने लिखा हैं .

शरस्य मोक्षस्य प्रथमं महीभुज ततश्च् तद्धैरि शरीरविक्ष्यतिः।
इति क्रमोगादनुमागम्यतां अलक्ष्य वेगुषु शरेषु धन्विनः।।[28]

जानकीहरण महाकाल के नायक राम श्रंगार प्रिय थे एक स्थल पर राम पुष्परत्नविभव से सीता को यथोप्सित विभूषित करते हुए चित्रित किये गये है। इसी प्रकार सूरत केलि के उपरान्त प्रभदकाननस्थित दीपिका में जल विहार करते समय उनके पुष्पाभूषणों का जल तरंगों के कारण विच्युत होना भी उल्लिखित हैं। इतना ही नहीं सीता के अंधि युगल पर कुंकुम द्रव का लेप करते हुए राम के हाथ कांपते सहसा अत्यधिक ऊँचाई तक पहुँच गये थे। महाकवि कुमारदास ने राम को अपनी आनमित तर्जनी से सीता के मुख पर पत्र रचना करते हुए चित्रित किया हैं। जिन्होंने प्रथमतः उनके अर्धमुकुलित नेत्र को तत्पश्चात् सुरभि युक्त मुख को चुम लिया था।

संदर्भ सूची

1. प्रतिमानाटकम 1/14
2. वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड 22/12
3. हनुमन्नाटक 4/15
4. हनुमन्नाटक 5/97
5. हनुमान्ननाटक 1/10
6. हनुमान्ननाटक 14/59
7. उत्तररामचरित 1/12
8. उत्तररामचरित 2/7
9. उत्तररामचरित 3/1
10. महावीरचरित 1/31
11. महावीरचरित 2/13
12. आश्चर्यचूडामणि 1/20
13. आश्चर्यचूडामणि 2/9
14. आश्चर्यचूडामणि 2/19
15. प्रसन्नराघवम 4 /12
16. प्रसन्नराघवम 4/46
17. बाल रामायण 4/62
18. बाल रामायण 8/36
19. बाल रामायण 1/12
20. रघुवंशम 11/38
21. रघुवंशम 14/87
22. जानकीहरण महाकाव्य 6/56
23. जानकीहरण महाकाव्य 2/12
24. जानकीहरण महाकाव्य 4/2
25. जानकीहरण महाकाव्य 2/44
26. जानकीहरण महाकाव्य 10/65
27. जानकीहरण महाकाव्य 12/36
28. जानकीहरण महाकाव्य 16/15